अज़ : शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मोहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1. गुजरात-इन्डिया
Ph: 91-79- 2539 11 68 E-mail : maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

''पुर अस्रार भिकारी''

येह बयान **पुर अस्रार भिकारी** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानीए दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का है, जिसे मजलिसे **मक्तबतुल मदीना** ने उर्दू में शाएअ़ फ़रमाया है। **मजलिसे तराजिम** (**दा'वते इस्लामी**) ने इस बयान को हिन्दी रस्मुल ख़त में **मक्त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। www.dawateislami.net

इस में अगर किसी जगह कमीबेशी पाए तो **मजलिसे तराजिम** को मुत्त़लअ़ फ़रमा कर स़वाब कमाइये।

राबित़ा:- ***मजलिसे तराजिम***
(दा'वते इस्लामी)
मक्त-बतुल मदीना®
अह़मदआबाद। **फ़ोन: 0091-79-2539 11 68**
Email : maktabahind@gmail.com

Sr. No.	786 फ़ेहरिस 92	Page No.
1	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	4
2	दौलत से दवा मिल सकती है शिफ़ा नहीं	8
3	चार फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	8
4	क़ब्र के शो'ले और धूएं	8
5	ह़राम माल की ख़ैरात ना मक़्बूल है	9
6	लुक़्मए ह़राम की तबाहकारियां	10
7	टेढ़ी क़ब्र	10
8	जहन्नम में फेंका जाएगा	10
9	मुर्दा उठ बैठा	11
10	सूद की मज़म्मत पर चार रिवायात	11
11	क़ब्र बिच्छूओं से पुर थी	12
12	दाढ़ी मूंडने की उजरत ह़राम है	12
13	माले ह़राम के शर-ई अह़काम	12
14	ईसार की म-दनी बहार	13

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

पुर अस्रार भिकारी[1]

शैत़ान लाख रोके मगर येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **पढ़ कर आप हक्के बक्के रह जाएंगे ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे **मक्कए मुकर्रमा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े कि़यामत उस की दहशतों और हि़साब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स़ वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे ।

(फ़िरदौसुल अख़्बार, जिल्द:5, स-फ़ह़ा:375, ह़दीस:8210)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक साहि़ब का बयान है : मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़ में **ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौस बहाउल ह़क़्क़े व द्दीन ज़करिया मुल्तानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِيْ के मज़ारे पुर अन्वार पर सलाम अ़र्ज़ करने के लिये मैं ह़ाज़िर हुवा, फ़ातेह़ा के बा'द जब लौटने लगा तो एक शख़्स पर मेरी नज़र पड़ी जो मश्ग़ूले दुआ़ था। मैं ठिठक कर वहीं खड़ा रह गया। दराज़ क़द, मगर बदन निहायत ही कमज़ोर और चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। चौंक कर खड़े होने की वजह येह थी कि **उस के गले में पानी का एक डोल लटका हुवा था जिस में उस ने अपने दाएं हाथ की उंगलियां डबो रखी थी,** उस के चेहरे को बग़ौर देखा तो कुछ आश्नाई की बू आई। मैं उस के फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा, जब उस ने दुआ़ ख़त्म की तो मैं ने उस को सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दे कर मेरी त़रफ़ ब ग़ौर देखा और मुझे पहचान लिया। लम्ह़ा भर के लिये उस के सूखे होंटों पर फीकी मुस्कराहट आई और फ़ौरन ख़त्म हो गई फिर ह़स्बे साबिक़ वोह उदास हो गया। मैं ने उस से गले में पानी का डोल लटकाने और उस में दाएं हाथ की उंगलियां डबोए रखने का सबब दरयाफ़्त किया। इस पर उस ने एक आहे सर्द, दिले पुर दर्द से खींचने के बा'द केहना शुरूअ़ किया :

मेरी एक छोटी सी परचून की दुकान है। एक बार मेरे पास आ कर एक **भिकारी** ने दस्ते सुवाल दराज़ किया, मैं ने एक सिक्का निकाल कर उस की हथेली पर रख दिया, वोह दुआ़एं देता हुवा चला गया। फिर दूसरे दिन भी आया और इसी त़रह़ सिक्का ले कर चलता बना। अब वोह रोज़ रोज़ आने लगा और मैं भी कुछ न कुछ उस को देने लगा। कभी कभी वोह मेरी दुकान पर थोड़ी देर बैठ भी जाता और अपने दुख भरे अफ़्साने मुझे सुनाता। उस की दास्ताने ग़म निशान सुन कर मुझे उस पर बड़ा तरस आता, यूं मुझे उस से काफ़ी हमदर्दी हो गई और हमारे दरमियान ठीकठाक याराना क़ाइम हो गया। दिन गुज़रते रहे। एक बार ख़िलाफ़े मा'मूल वोह कई रोज़ तक नज़र न आया मुझे उस की फ़िक्र लाह़िक़ हुई कि हो न हो वोह

---

1. कुछ अ़रसे पहले येह वाक़ेआ़ बत़ौरे ह़क़ीक़त एक गुजराती अख़्बार में शाएअ़ हुवा था। मैं ने उसे बेह़द इ़ब्रतनाक पाया, लिहाज़ा अपनी याददाश्त के मुत़ाबिक़ नीज़ कुछ तस़र्रुफ़ के साथ अपने अन्दाज़ में तह़रीर किया है ताकि इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये ख़ूब ख़ूब सामाने इ़ब्रत मुहय्या हो। सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ

www.dawateislami.net

बेचारा बीमार हो गया है वरना इतने नागे तो उस ने आज तक नहीं किये मैं ने उस का मकान तो देखा नहीं था अलबत्ता इतना ज़रूर मा'लूम था कि वोह शहर के बाहर वीराने में एक झोंपड़ी में तन्हा रहता है । ख़ैर मैं तलाश करता हुवा बिल आख़िर उस की झोपड़ी तक पहुंच ही गया । जब अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि हर त़रफ़ पुराने चिथड़े बिखरे पड़े हैं, एक त़रफ़ चन्द टूटे फूटे बरतन रखे हैं, अल ग़-रज़ दरो दीवार ग़ुर्बत व इफ़्लास के अफ़्साने सुना रहे थे । एक त़रफ़ वोह एक टूटी हुई चारपाई पर लेटा कराह रहा था, वोह सख़्त बीमार था और ऐसा लगता था कि अब जां बर न हो सकेगा । मैं सलाम कर के उस की चारपाई के पास खड़ा हो गया । उसने आंखें खोलीं और मेरी त़रफ़ देख कर उस की आंखों में हल्की सी चमक आई, अपने पास बैठने का इशारा किया, मैं बेठ गया । ब मुश्किल तमाम उस ने लब खोले और मधम आवाज़ में बोला : **भाई !** मुझे मुआ़फ़ कर दो कि मैं ने तुम से बहुत **धोका** किया है । मैं ने ह़ैरत से कहा : वोह क्या ? केहने लगा : मैं ने तुम को अपने दुख दर्द के जितने भी अफ़्साने सुनाए वोह सब के सब मन घड़त थे और इसी त़रह़ **घड़ी हुई दास्तानें** सुना सुना कर मैं लोगों से भीक मांगता रहा हूं । अब चूंकि बचने की ब ज़ाहिर कोई उम्मदी नज़र नहीं आती इस लिये तुम्हारे सामने ह़क़ाइक़ का इन्किशाफ़ किये देता हूं :

"**मैं** मुतवस्सितुल ह़ाल घराने में पैदा हुवा, शादी भी की, बच्चे भी हुए । मैं काम चोर हो गया और मुझे **भीक मांगने** की लत पड़ गई । मेरी बीवी को मेरे इस पेशे से सख़्त नफ़्रत थी । इस सिल्सिले में अक्सर हमारी लड़ाई ठनी रहती । रफ़्ता रफ़्ता बच्चे जवान हुए मैं ने उन को आ'ला द-रजे की ता'लीम दिलवाई थी । उन को बड़ी बड़ी मुलाज़मतें मिल गईं । अब वोह भी मुझ पर ख़फ़ा होने लगे उन का पैहम इस्रार था कि मैं **भीक मांगना** छोड़ दूं लेकिन मैं आ़दत से मजबूर था, मुझे दौलत से बेह़द प्यार था और बिग़ैर महनत की आती हुई दौलत को मैं छोड़ना नहीं चाहता । आख़िरे कार हमारा इख़्तिलाफ़ बढ़ता गया और मैं ने बीवी बच्चों को ख़ैरबाद केह कर इस वीराने में झोंपड़ी बांध ली ।"

www.dawateislami.net

इतना केहने के बा'द उस ने चीथड़ों के एक ढेर की त़रफ़ जो झोंपड़ी के एक कोने में था इशारा करते हुए कहा कि यहां से चीथड़े हटाओ इस के नीचे तुम्हें चार बोरियां नज़र आएंगी उन में से एक बोरी का मुंह खोल दो । चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया । **मैं ने जूं ही बोरी का मुंह खोला तो मेरी आंखें फटी की फटी रह गईं इस पूरी बोरी में नोटों की गड्डियां तेह दर तेह रखी हुई थीं** और येह एक अच्छी ख़ासी रक़म थी । अब वोह **भिकारी** मुझे बड़ा पुर असरार लग रहा था । केहने लगा : येह चारों बोरियां इसी त़रह़ नोटों से भरी हुई हैं । मेरे भाई ! देखो मैं ने तुम पर ए'तेमाद कर के अपना सारा राज़ फ़ाश कर दिया है अब तुम को मेरी **वसिय्यत** पर अ़मल करना होगा, करोगे ना ! मैं ने ह़ामी भर ली तो कहा : देखो ! मैं ने

इस दौलत से बड़ा प्यार किया है, इसी की ख़ातिर अपना भरा घर उजाड़ा, न कभी अच्छा खाया, न उ़म्दा लिबास पहना, बस इस को देख देख कर खुश होता रहा.... फिर थोड़ा रुक कर कहा, ज़रा नोटों की चन्द गड्डियां तो उठा कर लाओ कि उन्हें थोड़ा प्यार कर लूं !! मैं ने बोरी में से चन्द गड्डियां निकाल कर इस की त़रफ़ बढ़ा दी, उस की आंखों में एकदम चमक आ गई और उस ने अपने कांपते हुए हाथों से उन्हें ले लिया और अपने सीने पर रख दिया और बारी बारी चूमने लगा, हर एक गड्डी को चूमता और आंखों से लगाता जाता और केहता जाता कि मेरी **वसिय्यत ख़ास वसिय्यत** है और इस को तुम्हें पूरा करना ही पड़ेगा और वोह येह है कि मेरी ज़िन्दगी भर की पूंजी या'नी चारों नोटों की बोरियों को तुम्हें किसी त़रह़ भी मेरे साथ दफ़्न करना होगा । मैं ने वा'दा कर लिया । **वोह निहायत ह़सरत के साथ नोटों को चूम रहा था कि अचानक उस की ह़ल्क़ से एक ख़ौफ़नाक चीख़ निकल कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई, मैं ख़ौफ़ के मारे थर थर कांपने लगा, उस का नोटों वाला हाथ चारपाई की नीचे की त़रफ़ लटक गया, नोट हाथ से गिर पड़े । और सर दूसरी त़रफ़ ढलक गया और उस की रूह क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ हो गई ।**

मैं ने जल्द ही अपने आप पर क़ाबू पा लिया और उस के सीने वग़ैरा से और नीचे से भी नोट इकट्ठे कर के उस बोरी में वापस डाल दिये । बोरी का मुंह अच्छी त़रह़ बन्द कर के चारो बोरियां ह़स्बे साबिक़ चिथड़ों में छुपा दी । फिर चन्द आदमियों को साथ ले कर उस की तक्फ़ीन की और किसी भी हीले से बड़ी सी क़ब्र खुदवा कर ह़स्बे **वसिय्यत** वोह चारों बोरियां उस के साथ ही दफ़्न कर दी ।

www.dawateislami.net

कुछ अ़रसे बा'द मुझे कारोबार में ख़सारा शुरूअ़ हो गया और नौबत यहां तक आ गई कि मैं अच्छा ख़ासा मक़रूज़ हो गया । क़र्ज़ ख़्वाहों के तक़ाज़ों ने मेरे नाक में दम कर दिया, अदाए क़र्ज़ की कोई सबील नज़र नहीं आती थी । एक दिन अचानक मुझे अपना वोही पुराना यार **पुर अस्रार भिकारी** याद आ गया । और मुझे अपनी नादानी पर रह रह कर अफ़्सोस होने लगा कि मैं ने उस की ***वसिय्यत*** पर अ़मल कर के इतनी सारी रक़म उस के साथ क्यूं दफ़्न कर दी । यक़ीनन मरने के बा'द उसे क़ब्र में उस के माल ने कोई नफ़्अ़ न देना था, अगर मैं उस माल को रख लेता तो आज ज़रूर मालदार होता । मज़ीद शैत़ान ने मुझे मश्वरे देने शुरूअ़ किये कि अब भी क्या गया है । वहां क़ब्र में अब भी वोह दौलत सलामत होगी मैं ने किसी पर अभी तक येह राज़ ज़ाहिर किया ही नहीं है, ह़ीला कर के मैं ने तो बोरियां दफ़्न की है, वोह अब भी क़ब्र में मौजूद होगी । शैत़ान के इस मश्वरे ने मुझ में कुछ ढारस पैदा की और मैं ने अ़ज़्म कर लिया कि ख़्वाह कुछ भी हो जाए मैं वोह नोटों की बोरियां ज़रूर ह़ासिल कर के रहूंगा ।

एक रात कुदाल वग़ैरा ले कर मैं क़ब्रिस्तान पहुंच ही गया । मैं अब उस की क़ब्र के पास खड़ा था, **हर त़रफ़ हौलनाक सन्नाटा और ख़ौफ़नाक ख़ामोशी छाई हुई थी, मेरा दिल किसी ना मा'लूम ख़ौफ़ के सबब ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था और मैं पसीने**

में शराबूर हो रहा था । आख़िरे कार सारी हिम्मत जम्अ़ कर मैं ने उस की क़ब्र पर कुदाल चला ही दी । दो[२] तीन[३] कुदाल चलाने के बा'द मेरा ख़ौफ़ तक़रीबन जाता रहा, थोड़ी देर की महनत के बा'द मैं उस में एक मुनासिब सा शिग़ाफ़ करने में काम्याब हो गया । अब बस हाथ अन्दर बढ़ाने ही की देर थी लेकिन फिर मेरी हिम्मद जवाब देने लगी, ख़ौफ़ो दहशत के सबब मेरा सारा वुजूद थर थर कांपने लगा, त़रह़ त़रह़ के डरावने ख़यालात ने मुझ पर ग़लबा पाना शुरूअ़ किया, ज़मीर भी चिल्ला चिल्ला कर केह रहा था कि लौट चलो और माले ह़राम से अपनी आक़िबत को बरबाद मत करो लेकिन बिल आख़िर ह़िर्स व तमअ़ और मालदार हो जाने के सुनहरे ख़्वाब ने एक बार फिर ढारस बंधाई कि अब थोड़ी सी हिम्मत कर लो मन्ज़िले मुराद हाथ में है । **आह ! दौलत के नशे ने मुझे अंजाम से बिल्कुल ग़ाफ़िल कर दिया और मैं ने अपना सीधा हाथ क़ब्र के शिग़ाफ़ में दाख़िल कर दिया ! अभी बोरी टटोल ही रहा था कि मेरे हाथ में अंगारा आ गया । दर्द व कर्ब से मेरे मुंह से एक ज़ोरदार चीख़ निकल गई और क़ब्रिस्तान के भयानक सन्नाटे में गुम हो गई, मैं ने एक दम अपना हाथ क़ब्र से बाहर निकाला और सर पर पांव रख कर भाग खड़ा हुवा ।** मेरा हाथ बुरी त़रह़ झुलस चुका था और मुझे सख़्त जलन हो रही थी मैं ने ख़ूब रो रो कर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में तौबा की मेरे हाथ की जलन न गई । अब तक बे शुमार डॉक्टरों और ह़कीमों से इ़लाज भी करा चुका हूं लेकिन हाथ की जलन नहीं जाती । हां उंगलियां पानी में डबोने से कुछ आराम मिलता है । इसी लिये हर वक़्त अपना दायां हाथ पानी में रखता हूं ।

उस शख़्स की येह रिक़्क़त अंगेज़ दास्तान सुन कर मेरा दिल एक दम दुन्या से उचाट हो गया । दुन्या की दौलत से मुझे नफ़रत हो गई और बे साख़्ता क़ुरआने अ़ज़ीम की येह आयत मुझे याद आ गई :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान रह़म वाला । तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा ।

(पारह 30, अत्तकासुर:1,2)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ? माल की मह़ब्बत ने किस क़-दर तबाही मचाई । भिकारी अपने माले ह़राम को चूमते चूमते मरा और उस का दोस्त उस माले ह़राम को ह़ासिल करने गया तो इस मुसीबत में पड़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पुर अस्रार भिकारी और उस के दोस्त के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाए और इन दोनों की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत करे और येह दुआ़एं हम गुनहगारों के ह़क़ में भी क़बूल फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

जहां में है इ़ब्रत के हर सू नुमूने
मगर तुझ को अंधा किया रंगो बूने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तूने
जो आबाद थे वोह मह़ल अब है सूने

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जां है तमाशा नहीं है

दौलत से दवा मिल सकती है शिफ़ा नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे लिये इन की लर्ज़ाख़ेज़ दास्तान में इ़ब्रत के बे शुमार **म-दनी फूल** है। **हर वक़्त** मालो दौलत की ह़िर्स व तमअ़ में रचे बसे रहने वालों के लिये, जम्एु माल की हवस में ह़लाल व ह़राम की तमीज़ उठा देने वालों के लिये, **कारोबारी** मश्गूलिय्यात के सबब नमाज़ की जमाअ़त बल्कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ ही बरबाद करने देने वालों के लिये और ज़िन्दगी का सुकून सिर्फ़ व सिर्फ़ मालो दौलत में तलाश करने वालों के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। **याद रखिये !** दौलत से दवा तो ख़रीदी जा सकती है, **शिफ़ा** नहीं ख़रीदी जा सकती है। **दौलत** से दोस्त तो मिल सकते हैं मगर **वफ़ा** नहीं मिल सकती। **दौलत** सबब हलाकत तो हो सकती नहीं मगर इस के ज़रीएु मौत नहीं टाली जा सकती। **दौलत** तो शोहरत तो ह़ासिल हो सकती है मगर **इ़ज़्ज़त** ह़ासिल नहीं हो सकती।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "पुर अस्रार भिकारी" की लर्ज़ा ख़ेज़ दास्तान में पेशावर भाकारियों के लिये भी इ़ब्रत के म-दनी फूल हैं। **याद रखिये !** ब तौ़रे पेशा भीक मांगना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, जो बिला इजाज़ते शर-ई सुवाल करता है वोह जहन्नम की **आग** अपने लिये त़लब करता है और इस त़रह़ जितनी रक़म ज़ियादा ह़ासिल करेगा उतना ही नार (या'नी आग) का ज़ियादा ह़क़दार होगा। इस ज़िम्न में चार अह़ादीसे मुबारक मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

(1) जो शख़्स लोगों से **सुवाल** करे, ह़ालांकि न उसे न फ़ाक़ा पहुंचा, न इतने बाल बच्चे हैं जिन की त़ाक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा।"

(शुअ़बुल ईमान, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:274, ह़दीस:3526, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

(2) "जो शख़्स बिग़ैर ह़ाजत सुवाल करता है, गोया वोह **अंगारा** खाता है।"

(अल मो'जमुल कबीर, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:15, ह़दीस:3506, दारु एह्याइत्तुरासिल अ़रबी, बैरूत)

(3) "जो माल बढ़ाने के लिये **सुवाल** करता है, वोह **अंगारे** का सुवाल करता है तो चाहे ज़ियादा मांगे या कम का सुवाल करे।"

(सह़ीह़ मुस्लिम, स-फ़ह़ा: 518, ह़दीस:1041, दारु इब्ने ह़ज़म, बैरूत)

(4) "जो शख़्स लोगों से **सुवाल** करे इस लिये कि अपने माल को बढ़ाए तो वोह **जहन्नम का गर्म पत्थर** है, अब इसे इख़्तियार है, चाहे थोड़ा मांगे या ज़ियादा त़लब करे।"

(अल एह़सान बि तरतीब, इब्ने ह़ब्बान, जिल्द: 5, स-फ़ह़ा:16, ह़दीस़:3382, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

(2) क़ब्र के शो'ले और धूएं[1]

वोह पांचों वक़्त पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते थे, मालदार होने के साथ साथ बड़े सख़ी दिल भी थे, दिल खोल कर ग़रीबों और बेवाओं की इम्दाद किया करते, कई यतीम बच्चों की शादियां भी करवा दीं, ह़ज भी किया हुवा था। सिने 1973 हिजरी की एक सुब्ह़ उन का

---

1. येह लर्ज़ा ख़ेज़ दास्तान बत़ौरे ह़क़ीक़त नवाए वक़्त मेगेज़ीन में शाएअ़ हुई थी। बराए इ़ब्रत कुछ तसर्रुफ़ के साथ अपने अन्दाज़ में पेश की है। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

इन्तिक़ाल हो गया। बेहद मिलनसार और बा अख़्लाक़ होने के सबब अहले महल्ला मर्हूम से बहुत मुतअस्सिर थे लिहाज़ा सोगवारों का तांता बंध गया। उन के जनाज़े में भी लोगों का काफ़ी इज़्दहाम था। सब लोग क़ब्रिस्तान आए। क़ब्र खोद कर तैयार कर ली गई। जूं ही मय्यित क़ब्र में उतारने के लिये लाए कि ग़ज़ब हो गया! **यकायक क़ब्र खुद बखुद बन्द हो गई !!** सारे लोग हैरान रह गए, दोबारा ज़मीन खोदी गई। जब मय्यित उतारने लगे तो फिर क़ब्र खुद बखुद बन्द हो गई! सारे लोग हैरान व परेशान थे, एक आध बार मज़ीद ऐसा ही हुवा, आख़िरे कार चौथी बार तदफ़ीन में काम्याब हो ही गए। **फ़ातेहा पढ़ कर सब लौटे और अभी चन्द ही क़दम चले थे कि ऐसा महसूस हुवा जैसे ज़मीन ज़ोर ज़ोर से हिल रही है! लोगों ने बे साख़्ता पीछे मुड़ कर देखा तो एक होश उड़ा देने वाला मन्ज़र था। आह! क़ब्र में दराड़ें पड़ चुकी थीं, उस में से आग के शो'ले और धुएं उठ रहे थे और क़ब्र के अन्दर से चीख़ो पुकार की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। येह लर्ज़ा ख़ैज़ मन्ज़र देख कर सब के औसान ख़ता हो गए और जिस से जिस त़रह़ बन पड़ा भाग खड़ा हुवा।** लोग हैरतज़दा और बेहद परेशान थे कि ब ज़ाहिर नेक, सख़ी और बा अख़्लाक़ इन्सान आख़िर ऐसी कौन सी ख़ता थी जिस के सबब येह इस क़-दर हौलनाक अ़ज़ाबे क़ब्र में मब्तला हो गया। तह़क़ीक़ करने पर इस के ह़ालात कुछ यूं सामने आए : "मर्हूम बचपन ही से बहुत ज़हीन था, मां बाप ने आ'ला ता'लीम दिलवाई, जब खूब पढ़ लिख लिया तो किसी त़रह़ भी सिफ़ारिश या रिश्वत के ज़ोर पर एक सरकारी महकमे में मुलाज़मत इख़्तियार कर ली। रिश्वत लत पड़ गई। रिश्वत की दौलत से प्लॉट भी ख़रीदा और अच्छा ख़ासा बेन्क बेलेन्स भी बनाया। इसी ह़ज भी अदा किया और सारी सख़ावत इसी माले ह़राम से किया करता था।" **हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उसी की पनाह के त़लबगार हैं।**

हुस्ने ज़ाहिर पर अगर तू जाएगा — आ़लमे फ़ानी से धोका खाएगा
येह मुनक़्क़श सांप है डस जाएगा — कर न ग़फ़्लत याद रख पछताएगा

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! देखा आपने? माले ह़राम ह़ासिल करने वाले का किस क़-दर लर्ज़ा ख़ैज़ अन्जाम हुवा। याद रखिये! ब हुक्मे ह़दीस, **रिश्वत देने वाला और रिश्वत लेने वाला दोनों जहन्नमी हैं।**

(अल मो'जमुल अवसत़, लित़्बरानी, जिल्द:1,स-फ़ह़ा:550, ह़दीस:2026, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

ह़राम माल की ख़ैरात ना मक़्बूल है

ह़राम माल से किये जाने वाले नेक काम भी क़बूल नहीं किये जाते, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है और पाक माल ही को क़बूल फ़रमाता है। चुनान्चे सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गंजीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो शख़्स **ह़राम माल** कमाता है और फिर स-दक़ा करता है उस से क़बूल नहीं किया

जाएगा और उस से ख़र्च करेगा तो इस के लिये उस में ब-र-कत न होगी और इसे अपने पीछे छोड़ेगा तो येह इस के लिये **दोज़ख़** का ज़ादे राह होगा।

(शरहुस्सुन्नह लिल बग़वी, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:205, 206, ह़दीस:2023 दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

लुक़्मए ह़राम की तबाहकारियां

मन्क़ूल है, : बनी आदम के पेट में जब ह़राम का लुक़्मा पड़ा, तो ज़मीन व आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर ला'नत करेगा, जब तक कि वोह **लुक़्मा** उस के पेट में रहेगा और अगर इसी ह़ालत में मरेगा तो उस का ठिकाना **जहन्नम** होगा।

(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स-फ़ह़ा:10, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

(3) टेढ़ी क़ब्र

27 जुमादिल अव्वल सिने 1411 हिजरी को एक **पोलिस अफ़्सर** का जनाज़ा रावलपिंडी रता अम्राल क़ब्रिस्तान में लाया गया, जब उसे क़ब्र में उतारा जाने लगा तो **यकायक क़ब्र टेढ़ी हो गई !** पहले पहल तो लोगों ने उसे गोरकन का क़ुसूर क़रार दिया। दूसरी जगह क़ब्र खोदी गई, जब मय्यित को उतारने लगे तो **क़ब्र एक बार फिर टेढ़ी हो गई !!** अब लोगों में ख़ौफ़ व ह़िरास फैलने लगा। तीसरी बार भी ऐसा ही हुवा क़ब्र ह़ैरत अंगेज़ ह़द तक इस क़-दर **टेढ़ी** हो जाती कि तदफ़ीन मुम्किन न रहती। बिल आख़िर शुरकाए जनाज़ा ने मिल जुल कर मर्ह़ूम के लिये दुआए मग़्फ़िरत की और पांचवी क़ब्र में हर ह़ाल में तदफ़ीन का फ़ैसला किया गया। चुनान्चे पांचवी बार क़ब्र टेढ़ी होने के बा वुजूद ज़बरदस्ती फंसा कर मय्यित को उतार दिया गया। **हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उसी की पनाह के त़लबगार है।**

www.dawateislami.net

अजल ने न किस्रा ही छोड़ा न दारा — इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा
हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा — पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जां तमाशा नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पोलिस अफ़्सर के इस लर्ज़ा ख़ेज़ वाक़िए में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जाने उस पोलिस अफ़्सर के क्या क्या गुनाह थे जिस की वजह से उस को लोगों के लिये सामाने इ़ब्रत बना दिया गया ! जिस को ओ़हदा व मन्सब और इक़्तिदार की ख़्वाहिश हो वोह येह रिवायत ग़ौर से मुला-ह़ज़ा करे :

जहन्न में फ़ेंका जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, **अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स **दस अफ़्राद** का ह़ाकिम बना फिर इन के दरमियान फ़ैसले करता रहा, लोगों ने उस के फ़ैसले पसन्द किये हो या ना पसन्द। क़ियामत के दिन उसे इस ह़ाल में पेश किया जाएगा कि उस के हाथ गरदन से बंधे होंगे। अब अगर (दुन्या में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाज़िल फ़रमाए हुए अह़काम के मुत़ाबिक़ फ़ैसला किया होगा और रिश्वत भी न

ली होगी और न ही ज़ुल्म किया होगा। तो अल्लाह तआ़ला उस को आज़ाद फ़रमा देगा और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाज़िल फ़रमूदा अह्काम के ख़िलाफ़ फ़ैसला किया होगा, रिश्वत भी ली होगी और ना इन्साफ़ी की होगी तो उस का बायां हाथ दाएं हाथ के साथ बांधा जाएगा फिर उसे **जहन्नम में फेंक दिया जाएगा** तो येह जहन्न की तेह तक पांच सौ साल में भी न पहुंच सकेगा।

(अल मुस्तदरक लिल हाकिम, जिल्द:5, स-फ़ह़ा:140, ह़दीस:7151, दारुल मा'रेफ़ा बैरूत)

(4) मुर्दा उठ बैठा

जौहरआबाद (टन्डो आदम) के एक कपड़े के ताजिर की लर्ज़ा ख़ैज़ दास्तान सुनिये और कांपिये : अख़्बारी इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ क़ब्रिस्तान में एक जनाज़ा लाया गया। इमाम साहिब ने जूं ही नमाज़े जनाज़ा की निय्यत बांधी मुर्दा उठ कर बैठ गया ! लोगों में भगदड़ मच गई। इमाम साहिब ने भी निय्यत तोड़ दी और कुछ लोगों की मदद से इस को फिर लिटा दिया। **तीन मरतबा मुर्दा उठ कर बैठा।** इमाम साहिब ने मर्ह़ूम के रिश्तेदारों से पूछा : क्या मरने वाला **सूदख़ोर** था ? उन्हों ने इस्बात या'नी (तस्दीक़न हां) में जवाब दिया। इस पर इमाम साहिब ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से इन्कार कर दिया ! लोगों ने जब लाश क़ब्र में रखी तो क़ब्र ज़मीन के अन्दर धंस गई। इस पर लोगों ने लाश को मिट्टी वग़ैरा से दबा कर बिग़ैर फ़ातेह़ा ही घर की राह ली। **हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उसी की पनाह के त़लबगार है।**

www.dawateislami.net

सूदो रिश्वत में नुहूसत है बड़ी
और दोज़ख़ में सज़ा होगी कड़ी

सूद की मज़म्मत पर चार रिवायात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस त़रह़ के लर्ज़ा ख़ैज़ वाक़ेआ़त बन्दों को गुनाहों के अन्जाम से डराने और सुन्नतों भरे रस्ते पर चलने की तरग़ीब के लिये दिखाए जाते हैं। इ़ब्रत के लिये कभी कभी ज़ाहिर की जाने वाली सज़ाओं के मनाज़िर के इलावा मज़ीद ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब का सिल्सिला भी उन गुनहगारों के लिये हो सकता है। इस लर्ज़ा ख़ैज़ वाक़िए़ में मरने वाले को "सूदख़ोर" ज़ाहिर किया गया है। वाक़ेई सूद की भी बहुत ज़ियादा नुहूसत होती है। इस को समझने के लिये चार अह़ादीसे मुबारका मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला'नत फ़रमाई **सूद** लेने वाले और देने वाले और इस का काग़ज़ लिखने वाले और इस पर गवाही करने वालों पर और फ़रमाया वोह सब बराबर हैं।

(सह़ीह़ मुस्लिम, स़-फ़ह़ा:862, ह़दीस:1598, दारु इब्ने ह़ज़्म बैरूत)

(2) सुनने इब्ने माजा में है : नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं **सूद** तिहत्तर गुनाहों का मज्मूआ़ है, इन में सबसे हल्का येह है कि आदमी अपनी मां से ज़िना करे।

(सुनने इब्ने माजा, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:72, ह़दीस:2274,2275, मुल्तक़त़न मिनल ह़दीसैन)

(3) मुस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल में है : जो शख़्स जानबूझ कर **सूद** का एक दिरहम खाए तो छत्तीस दफ़्आ़ ज़िना करने से ज़ियादा सख़्त है।

(मुस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, जिल्द:8, स-फ़ह़ा:223, ह़दीस:22016, दारुल फ़िक्र बैरूत)

(4) सुनने इब्ने माजा में है : **सरकारे नामदार,** मदीने के ताजदार, ह़बीबे परवर्द गार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मे'राज की रात मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुवा, जिन के पेट मकानों की त़रह़ थे, इन मेंस सांप थे जो पेटों के बाहर से भी नज़र आते थे। मैं ने पूछा कि ऐ जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की, **वोह सूद खाने वाले हैं।**

(सुनने इब्ने माजा, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:7172, ह़दीस:2273, दारुल मा'रेफ़ा बैरूत)

मुफ़्स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : आज अगर एक मा'मूली कीड़ा पेट में पैदा हो जाए तो तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है, आदमी बे क़रार हो जाता है, तो समझ लो ! कि जब उस का पेट सांपों बिच्छूओं से भर जाए, तो उस की तकलीफ़ व बे क़रारी का क्या ह़ाल होगा, रब عَزَّوَجَلَّ की पनाह।

(मिर्आतुल मनाजीह़, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:259, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहौर)

(5) क़ब्र बिच्छूओं से पुर थी

किसी गांव में एक **ह़ज्जाम** का आख़िरी वक़्त था, लोगों ने उस से कहा : "कलिमा पढ़[1]।" उस ने जवाब न दिया। फिर कहा "कलिमा पढ़" मौत की सख़्ती की सबब उस ने مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ कलिमा शरीफ़ को गाली दी[2] कुछ देर बा'द उस का इन्तिक़ाल हो गया। जब दफ़्न करने लगे तो लोगों की चीख़ें निकल गईं क्यूंकि **क़ब्र बिच्छूओं से भरी पड़ी थी।** इस क़ब्र को लोगों ने बन्द कर दिया और दूसरी जगह क़ब्र खोदी। आह ! वोह क़ब्र भी बिच्छूओं से पुर थी। चुनान्चे इसी ह़ालत में **ह़ज्जाम** की लाश को क़ब्र में डाल कर क़ब्र बन्द कर दी गई। **हम क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार से उसी की पनाह के त़लबगार हैं।**

दाढ़ी मूंडने की उजरत ह़राम है

वोह नाई साह़िबान जो दाढ़ी जैसी अ़ज़ीमुश्शान सुन्नत को مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ मूंडने या कतर कर एक मुठ्ठी से घटाने वाला ख़ौफ़नाक जुर्म कर के مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ रोज़ी का सामान करते हैं वोह इस **लर्ज़ा ख़ेज़ वाक़िए** से इ़ब्रत ह़ासिल करे। नीज़ येह भी याद रखिये कि इस त़रह़ जो उजरत ह़ासिल होती है वोह भी **ह़राम व ख़बीस** है। साथ ही साथ दाढ़ी मुंडवाने वाले और एक मुठ्ठी से घटाने वाले भी क़हरे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से डरे कि इन का येह फ़े'ल **ह़राम** है। वक़ारुल फ़तावा, जिल्द:1, स-फ़ह़ा:259 पर है : "दाढ़ी मूंडना **ह़राम** है, येह काम करना **ह़राम** है, किसी से करवाना भी **ह़राम** और इस की उजरत भी **ह़राम** है।"

माले ह़राम के शर-ई अह़काम

ह़राम माल की दो सूरतें हैं :

(1) एक वोह **ह़राम माल** जो चोरी, रिश्वत, ग़सब और इन्हीं जैसे दीगर ज़राएअ़ से मिला हो इस को ह़ासिल करने वाला इस का अस्लन या'नी बिल्कुल मालिक ही नहीं बनता और इस माल के

लिये शरअ़न फ़र्ज़ है कि जिस का है उसी को लौटा दिया जाए वोह न रहा हो तो वारिसों को दे और इन का भी पता न चले तो बिला निय्यते सवाब फ़क़ीर पर ख़ैरात कर दे।

(2) दूसरा वोह ह़राम माल जिस में क़ब्ज़ा कर लेने से मिल्के ख़बीस ह़ासिल हो जाती है और येह वोह माल है जो किसी अ़क़्दे फ़ासिद के ज़रीए़ ह़ासिल हुवा हो जैसे सूद या दाढ़ी मूंडने या ख़शख़शी करने की उजरत वग़ैरा। इस का भी वोही हुक्म है मगर फ़र्क़ येह है कि उस को मालिक या इस के वु-रसा ही को लौटाना फ़र्ज़ नहीं अव्वलन फ़क़ीर को भी बिला निय्यते सवाब ख़ैरात में दे सकता है। अलबत्ता अफ़्ज़ल येही है कि मालिक या वुरसा को लौटा दे।

(माख़ूज़ अज़ : फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:23, स-फ़ह़ा:551,552 वग़ैरा)

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

ईसार की म-दनी बहार

एक इस्लामी बहन के साथ पेश आने वाली एक **म-दनी बहार** मुख़्तसरन अ़र्ज़े ख़िदमत है : बम्बई के एक अ़लाक़े में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (पीर शरीफ़ 22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 1428 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 12-3-2007) के इख़्तिताम पर एक ज़िम्मादार इस्लामी बहन के पास किसी नई इस्लामी बहन ने अपनी चप्पल की गुमशुदगी की शिकायत की। ज़िम्मादार इस्लामी बहनने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उसे अपनी चप्पल की पेशकश की। वहां मौजूद एक दूसरी इस्लामी बहन जिन को **म-दनी माह़ौल** से वाबस्ता हुए तक़रीबन सात माह हुए थे उस ने आगे बढ़ कर येह केहते हुए कि **''क्या दा'वते इस्लामी की ख़ात़िर मैं इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती !''** ब इस्रार अपनी चप्पलें पेश कर के उस नई इस्लामी बहन को क़बूल करने पर मजबूर कर दिया और ख़ुद पा बरहना (या'नी नंगे पांव) घर चली गई। रात जब सोई तो उस की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी ! क्या देखते है कि **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना चांद सा चेहरा चमकाते हुए जल्वा फ़रमा हैं नीज़ एक मुअ़म्मर **मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी** सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजाए क़दमों में ह़ाज़िर है। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लब्हाए मुबारका को जुम्बिश हुई रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : चप्पल ईसार करते वक़्त तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ ''क्या दा'वते इस्लामी की ख़ात़िर मैं इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती !'' हमें बहुत पसन्द आए। (इ़लावा अज़ीं भी ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ौल** में ईसार की भी क्या ख़ूब **म-दनी बहार** है ! नीज़ ईसार की फ़ज़ीलत के भी क्या ही अन्वार हैं ! दो जहां के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर बहार है : जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश को रोक कर (दूसरों को) अपने ऊपर तरजीह़ दे, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श देता है।

(इत्तिहाफ़ुल स्सादतिल मुत्तक़ीन, जिल्द:9, स-फ़ह़ा:779, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप अपनी आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये हर माह सिर्फ़ तीन दिन की क़ुरबानी नहीं दे सकते !!! मक़ामे ग़ौर है क्या **दा'वते इस्लामी** की ख़ातिर इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकते ?

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें ख़ुशदिली और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ख़ूब ख़ूब ईसार करने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा और हमें मदीनए मुनव्वरा में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला इनायत कर और अपने म-दनी हबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ौस में जगह अ़ता फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاُمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल
नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब

www.dawateislami.net